// राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 एक लघु विश्लेषण //

डॉ. जय श्री गुप्ता (सहायक प्राध्यापक विधि)
शासकीय विधि महाविद्यालय राजगढ़ (म.प्र.)

इतिहास :-

भारत में शिक्षा में सुधार के लिऐ 1948 में उच्चशिक्षा पर राधा कृष्ण आयोग, 1952 में माध्यमिक शिक्षा के लिये मृदुलियार आयोग तथा 1964 में समग्र शिक्षा हेतु कोठारी आयोग गठित किये गये थे। स्वतंत्रता के पश्चात भारत में प्रथम शिक्षा नीति 1968 में द्वितीय 1986 में तथा तृतीय राष्ट्रीय शिक्षा नीति की घोषणा 29 जुलाई 2020 को मानव संसाधन विकास मंत्री द्वारा की गई। इसी तरह भारत सरकार द्वारा शिक्षा के विभिन्न विषयों पर अनेक समितियाँ, टास्क फोर्स आदि का गठन किया गया। इन्होनें बहुत से अच्छे सुझाव तथा अनुशंसाऐं दी लेकिन इनका उचित क्रियान्यवयन न होने से हमारी शिक्षा की गुणवत्ता में कोई व्यापक सुधार नहीं आया। इसी हेतु राष्ट्रीय शिक्षा नीति का सुचारू एवं समग्रता से क्रियान्वयन एवं बड़ी चुनौति है।

नई शिक्षा नीति 2020 की विशेषताऐ :-

- **मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा** - भारतीय संस्कृति में ज्ञान को सर्वोच्च स्थान प्रदान किया गया है। क्योकि ज्ञान से ही जीवन में व्यापक बदलाव संभव है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इस बात पर विशेष जोर दिया गया है। कि ज्ञान का संवर्धन एवं संवहन अपनी भाषा के माध्यम से हो क्योंकि मातृभाषा में ज्ञान को प्राप्त करना सरल एवं सहज होता हैं। युनेस्को भी इस बात पर बल देते हुये प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने को स्वीकार कर रहा है। भारतेन्दु हरिशचन्द्र के अनुसार "निज भाषा उन्नति हवै, सब उन्नति को मूल। बिन निज भाषा ज्ञान के मिटय न हिय को शूल।"

- **चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व का समग्र विकास** - राष्ट्रीय शिक्षा नीति का प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थीयो के चरित्र का निर्माण है जिससे विद्यार्थीयो के जीवन के सभी पक्षों तथा क्षमताओं का संतुलित विकास हो सके। भारतीय चिंतन परम्परामे भी शिक्षा का महत्वपुर्ण लक्ष्य चरित्र निर्माण तथा समग्र व्यक्तित्व का विकास है। वर्तमान परिपेक्ष्य में इसकी आवश्कता और अधिक है।

- **संकल्प से सिद्धि का मार्ग** - राष्ट्रीय शिक्षा नीति में ज्ञान और मूल्यों का समन्वय पहली बार किया गया है। ज्ञान और मूल्यों के समन्वय से विद्यार्थी के बौद्धिक और वैयक्तिक दोनों ही का विकास होता है। जीवन शिक्षा और विषय शिक्षा का मेल शिक्षण को एक सार्थक स्वरूप प्रदान करता है। शिक्षा का उद्देश्य केवल उपाधि प्राप्त करना नही है बल्कि पुस्तकीय ज्ञान तथा उस ज्ञान के बोध के आधार पर विद्यार्थी के अन्दर स्वचिंतन, स्वाध्याय तथ तार्किकता की वास्तविक मेधा का विकास करना मुख्य उद्देश्य है। राष्ट्रीर शिक्षा नीति की यही विशेषता इसे समग्रता की ओर ले जाती है।

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थियों की भुमिका** – राष्ट्रीय शिक्षा नीति के केन्द्र मे विद्यार्थी, शोधार्थी तथा ज्ञानार्थी ही है उन्हे पठन–पाठन की स्वतंत्रता, कौशल विकास को समुचित अवसर राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुसार आने वाले भविष्य के लिये तैयार करने की प्रतिबद्धता राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों मे स्पष्ट दिखाई देती है। विद्यार्थियों की सफलता ही नई शिक्षा नीति का ध्येय है।

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षकों की भुमिका** – डॉ.सर्वपल्ली राधाकृष्ण ने कहा है कि प्रभावशाली शिक्षक बनने के लिए स्वंय को शिक्षार्थी बनाये रखना आवश्यक है। सीखने की प्रवृति रूक गई तो श्रेष्ठ शिक्षक बने रहना संभव नही है। शिक्षक का चरित्र तथा व्यक्तित्व विद्यार्थियो पर चिरकालीन प्रभाव डालता है। शिक्षक में विद्वता, नीतियत्ता तथा अनुशासन बनाये रखने की क्षमता का होना आवश्यक है। नई शिक्षा नीति यह गुण विकसित करने की अपेक्षा एक शिक्षक से करती है। जीवन मूल्यो के प्रति प्रतिबद्धता ही शिक्षक को आचार्य तथा आचार्य को मूल्यवान बनाती है।

- **आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में उच्च शिक्षा की भुमिका** – शिक्षा का उद्देश्य एक तरफ रोजगार है तो दूसरी तरफ व्यक्ति निर्माण। इन दोनो के बीच विरोधाभास यह है कि यदि इस ज्ञान आधारित परम्परा पर ध्यान देते है तो व्यावहारिक ज्ञान पीछे रह जाता है और यदि केवल रोजगार आधारित शिक्षा है तो व्यक्ति निर्माण की कल्पना साकार नहीं हो पाती। इसके लिए शिक्षा के वर्तमान तंत्र का स्वभाषा के आधार पर मानसिक रूप से तैयार किया जा रहा है। प्रदेश की उच्च शिक्षा ने प्राथमिक रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लागू किया है और इसके प्रचार–प्रसार के लिये प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयो, शिक्षाविदो एवं विद्यार्थियो का सम्मेलन, संगोष्ठी कर नवीन नीति के सभी पहलुओ पर विमर्श के लिए किए गये, जिसकी गूँज पुरे भारत मे है।

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अभिनव आयाम तथा नवाचार** – NEP-2020 का प्रमुख उद्देश्य भारत को वेश्विक स्तर पर शैक्षिक महाशक्ति बनाना तथा भारत में शिक्षा का सार्वभोमीकरण कर शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना है यह नीति उच्च शिक्षा में एक संकाय के विद्यार्थियो को अन्य संकाय के वैकल्पिक विषय चयन के अवसर प्रदान करती है। इस तरह का लचीलापन विद्यार्थी को अपने व्यक्तित्व के चँहुमुखी विकास के अवसर प्रदान करता है। NEP-2020 के तहत स्नातक पाठ्यक्रम में ''मल्टीपल एंट्री एंड मल्टीपल एक्जिट'' व्यवस्था को अपनाया गया है। इसके तहत 3 या 4 वर्ष के स्नातक पाठ्यक्रम में विद्यार्थी विभिन्न स्तर पर पाठ्यक्रम को छोड़ सकेंगे और उन्हे उसी के अनुरूप डिग्री या प्रमाण पत्र प्रदान किये जायेगे। विद्यार्थियो में ज्ञान के साथ साथ कार्य कुशलता तथा तकनीकि कोशल के विकास के लिए इंटर्नशिप तथा अप्रेंटिसशिप हेतु उद्योगो तथा व्यावसायिक संस्थाओं के साथ शिक्षण संस्थाओ की साझेदारी पर NEP-2020 में बल दिया गया है। शोध एवं नवाचार को बढ़ावा देने के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा अपने अध्यादेश मे इसे यथोचित

स्थान प्रदान किया गया है। संक्षेप में भारत का युवा ऊर्जावान, प्रतिभाशाली तथा सक्षम है, NEP-2020 मे भारतीय ज्ञान परम्परा तथा भारत की मूल आवश्यकताओ को ध्यान में रखते हुए देश के इस विशाल मानव संसाधन को भारत की शक्ति मे परिवर्तन करने का लक्ष्य रखा गया है

- **राष्ट्रीय शिक्षा नीति का क्रियान्वयन तथा संभावनाएँ** – शिक्षा नीति के क्रियान्वयन मे केन्द्र सरकार, विभिन्न प्रकार के कैन्द्रिय संस्थान, राज्य सरकारे, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय एंव विद्यालय तथा समाज इन सभी की महती भुमिका है। केन्द्र सरकार ने इसके क्रियान्वयन के लिए शिक्षाविदो एवं बुद्धिजीवियो की समिति का गठन करके समाज के सभी प्रकार के वर्गो से सुझाव प्राप्त किये थे। केन्द्र सरकार द्वारा क्रियान्वयन का कार्य प्रारंभ हो चुका है। शिक्षा समवर्ती सूची मे होने के कारण राज्यो की भी महत्वपुर्ण भूमिका है। राज्यों के द्वारा इस नीति के क्रियान्वयन के लिए टास्कफोर्स का गठन किया गया हैं। शिक्षा नीति की अधिकतम बातो का क्रियान्वयन विश्वविद्यालयो को करना है। विश्वविद्यालयो द्वारा महाविद्यालय तथा जिले की समिति द्वारा प्रत्येक विद्यालयो मे समिति का गठन करके शिक्षको की सहभागिता से क्रियान्वयन का कार्य किया जा रहा है।

  इन सभी क्रियान्वयन का आधार शिक्षक है। इस हेतु कार्यशालाओ के माध्यम से नियमित ओरिएंटेशन एवं समीक्षा करना आवश्यक है। इसके लिए शिक्षण संस्थाओ के परिवेश मे खुलापन तथा अकादमिक वातावरण बनाना होगा। इस प्रकार की समग्रता से NEP-2020 का क्रियान्वयन हो सकेगा। इस नीति के क्रियान्वयन से देश की शिक्षा मे आमूल चूक बदलाव की क्षमता है और शिक्षा मे बदलाव से ही भारत शक्ति संपन्न, समृद्ध तथा समर्थ होगा।

सारांश :–

शिक्षा की कसौटी शिक्षित व्यक्ति के आचरण और चिन्तन से परिलक्षित होती है। शिक्षा की सार्थकता ज्ञान प्राप्त करने मे ही नही बल्कि मूल्यो की स्थापना से होती है। नई शिक्षा नीति के माध्यम से शिक्षा मे खुलेपन एवं स्वतंत्रता के द्वारा भारत के युवाओं को अपने सपनो को साकार करने तथा देश को महाशक्ति बनने का मौका दिया है। गुणवत्ता आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिये शिक्षण मे नये विचारो तथा नये प्रयोगो के लिये प्रेरणादायक वातावरण का निर्माण करने के लिये शिक्षक और विद्यार्थी दोनो की बराबर की जिम्मेदारी है। नई शिक्षा नीति के द्वारा युवाओ को मिले अवसरो का यदि उचित उपयोग किया जाये तो निश्चित ही आज का युवा भारत देश को नये क्षितिज प्रदान करेगा।

संदर्भ ग्रन्थ –

- स्वर्णिम रचना, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020, ऐश्वर्य पुरोहित म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।
- नई शिक्षा नई उड़ान, उच्च शिक्षा विभाग, म.प्र.शासन।